इकाई 8 हितोपदेश - मित्रलाभ –वृद्धव्याघ्रलुब्धविप्रकथा पद्य 48 से 56 (अन्वय, शब्दार्थ, अनुवाद, व्याख्या, व्याकरणात्मक टिप्पणी)

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 काव्यांश की व्याख्या

8.2.1 यश की रक्षा

8.2.2 आत्मनिंदा अनुचित

8.2.3 भाग्य की प्रबलता

8.2.4 मित्रों का महत्त्व

8.2.5 सभी के साथ मित्रता अनुचित

8.3 सारांश

8.4 शब्दावली

8.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- हितोपदेश ग्रन्थ की विशेषताओं को जानेंगे ।
- लोकनीति की शिक्षा प्राप्त करेंगे ।
- जीवन में करणीय व अकरणीय कार्यों के विषय में जानेंगे ।
- संस्कृत में मूल धातुओं से शब्द संरचना, क्रियापद, अनेक सन्धियों व समासों को जानेंगे।

8.1 प्रस्तावना

हितोपदेश अनेक नीति युक्त कथाओं का एक संग्रहग्रन्थ है, इन नीति कथाओं का संकलन श्रीमन्नारायण पण्डित ने किया था । हितोपदेश में

नीतिशास्त्र, महाभारत, पंचतंत्र आदि ग्रंथों से विविध कथाएँ संग्रहीत की गई हैं । इन सभी कथाओं को चार प्रकरणों में बाँटा गया है (1) मित्रलाभ (2) सुहृद्भेद (3) विग्रह (4) सन्धि ।

पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन के मूर्ख पुत्रों को गुणवान् एवं सदाचारी बनाने के लिए इस ग्रन्थ की रचना की गई थी । पंडित विष्णु शर्मा नामक एक विद्वान् ने इस ग्रन्थ की कथाओं का सम्यक् अध्ययन कराकर उन मूर्ख राजपुत्रों को नीतिज्ञ व संस्कारी बनाया था ।

इस ग्रन्थ में दैनिक-जीवन, समाज और जगत् से सम्बद्ध गूढ व दुर्लभ ज्ञान अत्यन्त सरल भाषा में समाहित है । अपने दैनिक जीवन में इस ग्रन्थ में प्रतिपादित नीतियों का अनुसरण करने से मनुष्य सुख व शान्ति प्राप्त करता है । मनुष्य के व्यक्तित्व में बहु आयामी विकास हेतु यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है ।

8.2 काव्यांश की व्याख्या

8.2.1 यश की रक्षा

अपरञ्च पश्य ---

यदि नित्यमनित्येन निर्मलं मलवाहिना।
यशः कायेन लभ्यते तन्न लब्धं भवेन्नु किम्।। (49)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित यश की रक्षा करने का उपदेश दे रहे हैं ।

अन्वय---यदि अनित्येन मलवाहिना कायेन नित्यम् निर्मलम् यशः लभ्यते, नु तत् किम् लब्धम् न भवेत्?

शब्दार्थ—**अपरम् च** = और अन्य, **पश्य** = देखो, **यदि** = यदि, **अनित्येन** = अनित्य के द्वारा, **मलवाहिना** = मल को धारण करने वाले, **कायेन** = शरीर के द्वारा, **नित्यम्** = नित्य (सदा रहने वाले), **निर्मलम्** = निर्मल, **यशः** = यश, **लभ्यते** = प्राप्त होता है, **नु** = तो फिर (**किम्** = क्या) **तत्** = वह, **न** = नहीं, **लब्धम्** = प्राप्त किया, **भवेत्** = होवे

अनुवाद --और दूसरी बात यह देखो----

यदि अनित्य (सदा न रहने वाले), मल धारण करने वाले (इस) शरीर से नित्य (सदा रहने वाला) यश (कीर्ति) प्राप्त किया जाए तो (वास्तव में) (इससे) कौन सी (वस्तु) प्राप्त की हुई नहीं है (अर्थात् फिर तो सब कुछ मिल ही गया)।

व्याख्या ----इस संसार में यदि कोई व्यक्ति थोड़े से मूल्य से अधिक मूल्य वाली वस्तु प्राप्त करले, तो यह सौदा बुरा नहीं माना जाता। यहाँ हिरण्यक से चित्रग्रीव यही बात कह रहा है कि मेरा शरीर जो गन्दगी से परिपूर्ण है, कभी भी मृत्यु को प्राप्त हो सकता है, नित्य रहने वाला नहीं है। इससे यदि मुझे सदा रहने वाला और निर्मल यश प्राप्त हो जाये, तो समझो कि मुझे सब कुछ मिल गया। अतः तुम मेरे शरीर की चिन्ता न करके पहले मेरे आश्रितों के बन्धन को काट दो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद—

अपरञ्च = अपरम् + च,

नित्यमनित्येन = नित्यम् + अनित्येन,

तन्न = तत् + न,

भवेन्नु = भवेत् + नु ।

समास विग्रह—

अपरम् = न परो यस्मात् अपरम्।

अनित्यम् = न नित्यम् अनित्यम्।

मलवाहिना = मलानि वहति इति मलवाही तेन मलवाहिना।

यतः---

शरीरस्य गुणानाञ्च दूरमत्यन्तमन्तरम्।
शरीरं क्षणविध्वंसि कल्पान्तस्थायिनो गुणाः।। (50)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित यश की रक्षा करने का उपदेश दे रहे हैं ।

अन्वय — शरीरस्य गुणानाम् च अन्तरम् अत्यन्तम् दूरम्। शरीरम् क्षणविध्वंसि, गुणाः कल्पान्तस्थायिनः।

शब्दार्थ—यतः = क्योंकि, **शरीरस्य** = शरीर का, **च** = और **गुणानाम्** = गुणों का, **अन्तरम्** = भेद, **अत्यन्तम्** = बहुत, **दूरम्** = अधिक, **शरीरम्** = शरीर , **क्षणविध्वंसि** = क्षण भर में नाश होने वाला, **गुणाः** = गुण, **कल्पनान्तस्थायिनः** = महाप्रलय तक रहने वाले ।

अनुवाद -क्योंकि---

शरीर और गुणों का अन्तर बहुत अधिक है । (क्योंकि) शरीर तो क्षण भर में नष्ट होने वाला है और गुण प्रलय तक विद्यमान रहने वाले हैं ।

व्याख्या — चित्रग्रीव के कहने का तात्पर्य यह है कि मुझे शरीर के नष्ट होने की थोड़ी भी चिन्ता नहीं है। क्योंकि मृत्यु आने पर यह कभी भी नष्ट हो सकता है और अभी यदि मैंने इन कबूतरों के बन्धन मुक्त होने से पूर्व ही मेरे बन्धन काट लिए तो मेरा अपयश होगा, मेरे गुण फिर चारों ओर नहीं फैल पायेंगे। अतः मैं अपने यश के विषय में अधिक चिन्तित हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद—

गुणानाञ्च = गुणानाम् + च,

दूरमत्यन्तमन्तरम् = दूरम् + अत्यन्तम् + अन्तरम्,

कल्पान्तस्थायिनो गुणाः = कल्पान्तस्थायिनः + गुणाः =

समास विग्रह----

क्षणविध्वंसि = क्षणेन विध्वंसते (नश्यति) इति क्षणविध्वंसि।

कल्पान्तस्थायिनः = कल्पस्य (महाप्रलयस्य) अन्तः (शेषः) तम् यावत् तिष्ठन्ति इति कल्पान्तस्थायिनः (महाप्रलयपर्यन्तम् स्थितिमन्तः)।

इत्याकर्ण्य हिरण्यकः प्रहृष्टमना पुलकितः सन् अब्रबीत् "साधु मित्र! साधु, अनेनाऽऽश्रितवात्सल्येन त्रैलोक्यस्याऽपि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते।" एवमुक्त्वा तेन सर्वेषां कपोतानां बन्धनानि छिन्नानि। ततो हिरण्यकः सर्वान् सादरं सम्पूज्य आह - सखे चित्रग्रीव! सर्वथाऽत्र जालबन्धनविधौ सति दोषमाशङ्क्य आत्मनि अवज्ञा न कर्त्तव्या यतः----।

शब्दार्थ----इति = इस प्रकार, **आकर्ण्य** = सुनकर, **हिरण्यकः** = हिरण्यक (चूहे) ने, **प्रहृष्टमनाः** = प्रसन्न मन वाला, **पुलकितः** = रोमांचित, **सन्** =

होते हूए, **अब्रवीत्** = कहा, **साधु** = बहूत अच्छा, **मित्र** = हे मित्र, **अनेन** = इस, **आश्रितवात्सल्येन** = आश्रितों के प्रति अतिशय स्नेह के कारण, **त्रैलोक्यस्य** = त्रिलोकी, (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल लोक) का, **अपि** = भी, **प्रभुत्वम्** = स्वामित्व, **त्वयि** = तुम में (अर्थात् तुम्हारे लिए), **युज्यते** = ठीक (युक्तिसङ्गत) है, **एवम्** = इस प्रकार, **उक्त्वा** = कह कर, **तेन** = उस (चूहे हिरण्यक के द्वारा), **सर्वेषाम्** = सभी, **कपोतानाम्** = कबूतरों के, **बन्धनानि** = फन्दे, **छिन्नानि** = काट दिये गये, **ततः** = इसके बाद, **हिरण्यकः** = हिरण्यक चूहा, **सर्वान्** = सभी कबूतरों को, **सादरम्** = आदर के साथ, **सम्पूज्य** = पूजकर, **आह** = बोला, **सखे चित्रग्रीव** = हे मित्र चित्रग्रीव, **सर्वथा** = सब तरह से, **अत्र** = यहाँ, **जालबन्धनविधौ** = पाश से बन्धनयुक्त होने पर, **सति** = होने पर, **दोषम्** = अपराध को, **आशङ्क्य** = सोचकर, **आत्मनि** = अपने आप में, **अवज्ञा** = तिरस्कार, **न** = नहीं, **कर्त्तव्या** = करना चाहिए, **यतः** = क्योंकि

अनुवाद ----ऐसा सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित हिरण्यक ने रोमाञ्चित होते हूए कहा---बहूत अच्छा मित्र! बहूत अच्छा, आश्रितों के प्रति तुम्हारे इस वात्सल्य के कारण तीनों लोकों का स्वामित्व भी तुम्हारे लिए उचित है। ऐसा कह कर उसने सारे कबूतरों के बन्धन काट डाले। इसके बाद हिरण्यक ने उन सब को आदर सहित सम्मानित करके कहा - हे मित्र चित्रग्रीव, यहाँ जाल के बन्धन में पड़ जाने पर (इसमें अपना) दोष मानकर तुम्हें अपने आपका तिरस्कार नहीं करना चाहिए। क्योंकि----

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद----

इत्याकर्ण्य = इति + आकर्ण्य,

अनेनाऽऽश्रितवात्सल्येन = अनेन + आश्रितवात्सल्येन,

त्रैलोकस्याऽपि = त्रैलोक्यस्य + अपि,

एवमुक्त्वा = एवम् + उक्त्वा,

ततो हिरण्यकः = ततः + हिरण्यक:,

सर्वथाऽत्र = सर्वथा + अत्र,

दोषमाशङ्क्य = दोषम् + आशङ्क्य ।

समास विग्रह–

प्रहृष्टमनाः = प्रहृष्टम् मनो यस्य सः प्रहृष्टमनाः।

पुलकितः = पुलकाः (रोमाञ्चाः) सञ्जाताः अस्य इति पुलकितः।

आश्रितवात्सल्येन= आश्रितेषु वात्सल्यः, आश्रितवात्सल्यः तेन आश्रितवात्सल्येन।

त्रैलोक्यस्य = त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः त्रिलोकी, त्रिलोकी एव त्रैलोक्यम् तस्य त्रैलोक्यस्य।

जालबन्धनविधौ = जालेन बन्धनम् जालबन्धनम्, तस्य विधिः तस्मिन् जालबन्धनविधौ ।

8.2.2 आत्मनिंदा अनुचित

योऽधिकाद् योजनशतात् पश्यतीहामिषं खगः।
स एव प्राप्तकालस्तु पाशबन्धं न पश्यति।। (51)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित एक उदाहरण के माध्यम से आत्म निंदा न करने का उपदेश दे रहे हैं ।

अन्वय — इह यः खगः योजनशतात् अधिकात् आमिषम् पश्यति, सः एव प्राप्तकालः तु पाशबन्धम् न पश्यति।

शब्दार्थ---- **इह** = इस संसार में, **यः** = जो, **खगः** = पक्षी (श्येन या बाज), **योजनशतात्** = एक सौ योजन की (एक योजन में चार कोस या आठ मील की दूरी होती है), **अधिकात्** = दूरी पर, **आमिषम्** = मांस को, **पश्यति** = देखता है, **सः एव** = वही (पक्षी) ही , **प्राप्तकालः** = समय आ जाने पर, **पाशबन्धम्** = जाल को, **न** = नहीं ।

अनुवाद ---- इस संसार में जो (बाज) पक्षी एक सौ योजन (चार सौ कोस) से भी अधिक दूरी पर स्थित मांस को देख लेता है, वही समय आने पर अपने जाल के बन्धन को भी नहीं देख पाता है।

व्याख्या ----यह नितान्त सच बात है कि जब 'काल' आ जाता है, तो प्राणी को अपने भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता और वह सङ्कट की दशा को प्राप्त कर लेता है। अतः किसी को भी अपने दुःख की स्थिति का चिन्तन करके अपना अनादार अथवा तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद----

योऽधिकाद् योजनशतात् = यः + अधिकात् + योजनशतात्,

पश्यतीहामिषम् = पश्यति + इह + आमिषम्,

प्राप्तकालस्तु = प्राप्तकालः + तु ।

समास विग्रह---

खगः = खे (आकाशे) गच्छति इति खगः,

योजनशतात् = योजनानाम् शतं तस्मात् योजनशतात्।

प्राप्तकालः = प्राप्तः (प्रत्यासन्नः) कालः (अन्तको) यस्य सः प्राप्तकालः,

पाशबन्धम् = पाशस्य बन्धः पाशबन्धः तम् पाशबन्धम्।

8.2.3 भाग्य की प्रबलता

अपरञ्च।

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं
गजभुंजङ्गमयोरपि बन्धनम्।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो बलवानिति मे मतिः।। (52)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित उदाहरण के माध्यम से भाग्य की प्रबलता का प्रतिपादन कर रहे हैं ।

अन्वय---शशिदिवाकरयोः ग्रहपीडनम् गजभुजङ्गमयोः अपि बन्धनम् च मतिमताम् दरिद्रताम् विलोक्य, 'अहो!' विधिः बलवान् इति मे मतिः।

शब्दार्थ----अपरम् च = और दूसरी बात, **शशिदिवाकरयोः** = चन्द्रमा और सूर्य का, **ग्रहपीडनम्** = (राहू) ग्रह द्वारा दुःख पहूँचाना, **गजभुजङ्गमयोः** = हाथी और सर्प का, **अपि** = भी, **बन्धनम्** = बाँधा जाना, **च** = और, **मतिमताम्** = बुद्धिमानों की, **दरिद्रताम्** = निर्धनता को, **विलोक्य** = देखकर, **अहो** = अरे, **विधिः** = भाग्य, **बलवान्** = शक्तिशाली, **इति** = ऐसी, **मे** = मेरी, **मतिः** = बुद्धि।

अनुवाद ----और भी,

सूर्य और चन्द्रमा को (राहू) ग्रह द्वारा पीड़ा पहूँचाना, हाथी और सर्प को भी बाँध लिया जाना तथा विद्वानों का निर्धन होना—इन सब को देखकर अहो ! भाग्य बड़ा शक्तिशाली होता है' ऐसा बुद्धि में (आता) है।

व्याख्या ---- यह भाग्य बड़ा प्रबल होता है। इसके सामने किसी की भी नहीं चलती है। सब इसके सामने नतमस्तक रहते हैं । उपर्युक्त पद्य की चतुर्थ पंक्ति में यह कहने के बाद ऊपर की तीन पंक्तियों में अपनी मान्यता की पुष्टि में तीन उदारहण दिये गये हैं, जो बड़े मार्मिक है---

आकाश में सूर्य और चन्द्र अतीव शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण ग्रह माने जाते हैं । समय की गति का ज्ञान भी इन्हीं से होता है । इतना होने पर भी ये दोनों राहू और केतू द्वारा आक्रमण किये जाते हैं और ग्रसे जाते हैं। इसका आशय यह है कि इतने शक्तिशाली भी अपने दुःख देने वाले के सामने कुछ भी करने में असमर्थ हो जाते हैं।

वन में हाथी और सर्प बड़े शक्तिशाली होते हैं। फिर भी उन्हें पकड़ने वाले रस्सी के द्वारा उन्हें बाँध लेते हैं। इस प्रकार अनेक प्राणियों का नाश करने में समर्थ भी ये दोनों हाथी व साँप असहाय होकर बँध जाते हैं।

संसार में प्रायः विद्वान् व्यक्ति निर्धन देखे जाते हैं। यह भी एक विडम्बना की बात है कि जो व्यक्ति इतना ज्ञान सम्पन्न एवं विविध शास्त्रों में पारङ्गत होता है, वह बेचारा लक्ष्मी से वञ्चित होकर रहता है, भाग्य के आगे किसी की भी नहीं चलती है वह सभी का नियामक है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद—

अपरञ्च = अपरम् + च,

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम् = शशिदिवाकरयोः + ग्रहपीडनम्,

गजभुजङ्गमयोरपि = गजभुजङ्गमयोः + अपि,

विधिरहो = विधिः + अहो,

बलवानिति = बलवान् + इति ।

समास विग्रह—

शशिदिवाकरयोः = शशः चिह्नरूपः अस्ति यस्य इति शशी (चन्द्रमाः), दिवम् करोति इति दिवाकरः (सूर्य), तयोः शशिदिवाकरयोः।

ग्रहपीडनम् = ग्रहेण (राहुणा) पीडनम् (ग्रसनम्) ग्रहपीडनम्।

गजभुजङ्गमयोः= गजः (हस्ती) भुजङ्गमः (सर्पः) तयोः गजभुजङ्गमयोः।

मतिमताम् = मति अस्ति एषाम् इति मतिमन्तः तेषाम् मतिमताम् (विदुषाम्)।

दरिद्रताम् = दरिद्रस्य भावः दरिद्रता ताम् दरिद्रताम्।

अन्यच्च----

व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि विहगाः सम्प्राप्नुवन्त्यापदं।
बध्यन्ते निपुणैरगाधसलिलान्मत्स्याः समुद्रादपि।
दुर्नीतं किमिहाऽस्ति किं सुचरितं कः स्थानलाभे गुणः।
कालो हि व्यसनप्रसारितकरो गृह्णाति दुरादपि।। (53)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित उदाहरण के माध्यम से भाग्य की प्रबलता का प्रतिपादन कर रहे हैं ।

अन्वय---व्योमैकान्तविहारिणः अपि विहगाः आपदम् सम्प्राप्नुवन्ति। निपुणैः अगाधसलिलात् समुद्रात् अपि मत्स्याः बध्यन्ते। इह किम् दुर्नीतम् अस्ति? किम् सुचरितम्? स्थानलाभे कः गुण? हि व्यसनप्रसारितकरः कालः दूरात् अपि गृह्णाति।

शब्दार्थ---**अन्यत् च** = और दूसरा भी, **व्यौमैकान्तविहारिणः** = आकाश के ऊपरी भाग में विचरण करने वाले, **अपि** = भी, **विहगाः** = पक्षी, **आपदम्** = आपत्ति को, **सम्प्राप्नुवन्ति** = प्राप्त करते हैं, **निपुणैः** = चतुर व्यक्तियों के द्वारा, **अगाधसलिलात्** = गहरे पानी वाले, **समुद्रात्** = समुद्र से, **मत्स्याः** = मछलियाँ, **अपि** = भी, **बध्यन्ते** = पकड़ी जाती हैं, **इह** = इस संसार में, **किम्** = क्या, **दुर्नीतम्** = अनुचित आचरण, **सुचरितम्** = अच्छा, **स्थानलाभे** = उत्तम स्थान की प्राप्ति होने पर, **गुणः** = लाभ, **हि** = सचमुच में, **व्यसनप्रसारितकरः** = आपत्ति रूपी हाथ को फैलाने वाला, **कालः** = मृत्यु या महाकाल, **दूरात्** = दूर से, **अपि** = भी, **गृह्णाति** = पकड़ लेता है।

अनुवाद -और देखो----

आकाश में उड़ने वाले पक्षी भी आपत्ति को प्राप्त करते हैं। चतुर लोग गहरे पानी वाले समुद्र में से मछलियों को पकड़ लेते हैं। इस संसार में क्या बुरा है और क्या अच्छा है तथा उत्तम स्थान मिलने पर भी क्या लाभ है? क्योंकि आपत्ति रूपी हाथों को फैला कर काल (यमराज प्राणी को) दूर से भी पकड़ लेता है।

व्याख्या ----इस पद्य में भी भाग्य की प्रबलता को बताया गया है। पक्षी और जलचर जीव दोनों ही निष्पाप होते हैं। प्रथम आकाश में उड़ते हैं और दूसरे केवल जल में ही क्रीड़ा करते हैं। ये दोनों ही किसी प्रकार का अपराध करने वाले नहीं हैं । फिर भी मनुष्य इनको पकड़ता है, बाँधता है और मार डालता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि इस जगत् में न तो कोई नीति और और न ही दुर्नीति। यही नहीं, यहाँ उत्तम स्थान प्राप्त करने में भी कोई लाभ नहीं है। क्योंकि काल या यमराज किसी को भी क्षमा नहीं करता है। वह चाहे तो जिस किसी को भी अपने विपत्ति रूपी लम्बे हाथों से पकड़कर खींच लेता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद—

अन्यच्च = अन्यत् + च,

व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि = = व्योम + एकान्तविहारिणः + अपि,

सम्प्राप्नुवन्त्यापदम् = सम्प्राप्नुवन्ति + आपदम्,

निपुणैरगाधसलिलान्मत्स्याः = निपुणैः + अगाधसलिलात् + मत्स्याः,

समुद्रादपि = समुद्रात् + अपि,

किमिहास्ति = किम् + इह + अस्ति,

व्यसनप्रसारितकरो गृह्णाति = व्यसनप्रसारितकरः + गृह्णाति,

दूरादपि = दूरात् + अपि ।

समास विग्रह

व्योमैकान्तविहारिणः = व्योम्नः (गगनस्य) एकान्तः एकः अन्तः (उपरिभागः) तस्मिन् विहरन्ति इति व्योमैकान्तविहारिणः (गगनगामिनः)।,

अगाधसलिलात् = अगाधानि (अतलस्पर्शानि) सलिलानि (जलानि) यस्मिन् सः तस्मात् अगाधसलिलात्।

स्थानलाभे = स्थानस्य (निष्पाप्रदेशस्य) लाभः (प्राप्तिः) तस्मिन् स्थानलाभे।

व्यसनप्रसारितकरः = व्यसने (विपदि) प्रसारितौ (विस्तारितौ) करौ (हस्तौ) येन सः व्यसनप्रसारितकरः।

इति प्रबोध्य आतिथ्यं कृत्वा आलिङ्ग्य च तेन सम्प्रेषितश्चित्रग्रीवोऽपि सपरिवारो यथेष्टदेशान् ययौ, हिरण्यकोऽपि स्वविवरं प्रविष्टः।

शब्दार्थ---इति = इस प्रकार, **प्रबोध्य** = समझा कर, **आतिथ्यम्** = अतिथि सत्कार, **कृत्वा** = करके, **आलिङ्ग्य** = आलिंगन करके, **च** = और, **तेन** = उस (हिरण्यक) के द्वारा, **सम्प्रेषितः** = विदा किया गया, **चित्रग्रीवः** = चित्रग्रीव (कबूतर), **अपि** = भी, **सपरिवारः** = अपने परिवार के साथ, **यथेष्टदेशान्** = (अपने) इच्छित स्थानों को, **ययौ** = चला गया, **हिरण्यकः अपि** = हिरण्यक भी, **स्वविवरम्** = अपने बिल में, **प्रविष्टः** = प्रवेश कर गया,

हिन्दी अर्थ---- उस (हिरण्यक) के द्वारा इस प्रकार समझा कर, अतिथि सत्कार करके और आलिङ्गन करके चित्रग्रीव को विदा किया गया, जो अपने परिवार के साथ अपने इच्छित स्थानों को गया, हिरण्यक भी अपने बिल में प्रवेश कर गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी -

सन्धि विच्छेद----

सम्प्रेषितश्चित्रग्रीवोऽपि = सम्प्रेषितः + चित्रग्रीवः + अपि,

सपरिवारो यथेष्टदेशान् = सपरिवारः + यथेष्टदेशान्,

हिरण्यकोऽपि = हिरण्यकः + अपि

समास विग्रह----

आतिथ्यम् = न तिष्ठति भोजनादिकम् एकस्थले इति अतिथिः, तस्य सेवा आतिथ्यम्।

सपरिवारः =परिवारेण सहितः सपरिवारः।

स्वविरम् = स्वस्य विवरम् स्वविरम्।

8.2.4 मित्रों का महत्त्व

यानि कानि च मित्राणि कर्त्तव्यानि शतानि च।
पश्य मूषिकमित्रेण कपोता मुक्तबन्धनाः।। (54)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित इस कथा के माध्यम से बतला रहे हैं कि मनुष्य को अपने जीवन में अनेक मित्र बनाने चाहिये, क्योंकि सच्चा मित्र विपत्ति में अवश्य काम आता है ।

अन्वय---(मनुष्येण) यानि कानि शतानि मित्राणि च कर्त्तव्यानि , (त्वम्) पश्य, कपोताः मूषिकमित्रेण मुक्तबन्धनाः (जाताः)

शब्दार्थ--- **यानि कानि च** = ऐसे-वैसे (अर्थात् छोटे-बड़े या धनी-निर्धन या नीच-महान्), **शतानि च** = सैंकड़ो, **मित्राणि** = मित्र, **कर्त्तव्यानि** = बनाने चाहिए, , **पश्य** = (तुम) देखो, **मूषिकमित्रेण** = चूहे मित्र के द्वारा, **कपोताः** = कबूतर, **मुक्तबन्धनाः** = जाल से छुड़ाए गए।

अनुवाद ---

मनुष्य को ऐसे-वैसे (अर्थात् छोटे-बड़े या धनी-निर्धन या नीच-महान्) सैकड़ों मित्र बनाने चाहिए, देखो चूहे मित्र के द्वारा कबूतर जाल से छुड़ाए गए।

व्याख्या ----

इस पद्य के माध्यम से एक और शिक्षा दी गई है कि मनुष्यों को मित्र अवश्य बनाने चाहिए। इसमें यह विचार नहीं करना चाहिए कि मै बड़े, धनवान् अथवा सुशिक्षित मित्र ही बनाऊँ। मित्र कैसे भी हो, यदि वह सच्चा मित्र है तो विपत्ति में अवश्य काम आयेगा, जैसे कि इस कथा में चूहे ने कबूतरों की रक्षा की।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद----

कपोता मुक्तबन्धनाः = कपोताः + मुक्तबन्धनाः ।

समास विग्रह----

मूषिकमित्रेण = मूषिकः एव मित्रम् तेन मूषिकमित्रेण।

मुक्त-बन्धनाः = मुक्तम् (छित्रम्) (जालस्य) बन्धनम् येषाम् ते मुक्त-बन्धनाः।

अथ लघुपतनकनामा काकः सर्ववृत्तान्तदर्शी साश्चर्यमिदमाह---"अहो हिरण्यक ! श्लाघ्योऽसि, अतोऽहमपि त्वया सह मैत्रीं कर्तुमिच्छामि, अतस्त्वं मां मैत्र्येणाऽनुगृहीतुमर्हसि।" एतच्छ्रुत्वा हिरण्यकोऽपि विवराऽभ्यन्तरादाह---कस्त्वम् ? स ब्रूते - लघुपतनकनामा वायासोऽहम् । हिरण्यको विहास्याऽह - का त्वया सह (मम) मैत्री? यतः।

शब्दार्थ----अथ = इसके अनन्तर, **लघुपतनकनामा** = लघुपतनक नाम वाले, **काकः** = कौए ने, **सर्ववृत्तान्तदर्शी** = सारी घटना को देखने वाला, **साश्चर्यम्** = आश्चर्य के साथ , **इदम्** = यह, **आह** = कहा, **अहो** = आश्चर्य है, **हिरण्यक** = हे हिरण्यक (चूहे), **श्लाघ्यः** = (तुम) प्रशंसनीय, **असि** = हो, **अतः** = इस कारण, **अहम् अपि** = मैं भी, **त्वया सह** = तुम्हारे साथ, **मैत्रीम्** = मित्रता को, **कर्तुम्** = करने के लिए, **इच्छामि** = इच्छा करता हूँ, **अतः** = अतः, **त्वम्** = तुम (मूषक), **माम्** = मुझको (कौवे को), **मैत्र्येण** = मित्र भाव के द्वारा, **अनुगृहीतुम्** = अनुगृहीत (कृपा) करने के लिए, **अर्हसि** = योग्य हो, **एतत्** = यह, **श्रुत्वा** = सुनकर, **हिरण्यकः अपि** = हिरण्यक (चूहा) भी, **विवराऽभ्यन्तरात्** = बिल के अन्दर से, **आह** = बोला, **कः त्वम्** = तुम कौन हो, **सः** = वह (कौवा), **ब्रूते** = कहता है, **लघुपतनकनामा** = लघुपतनक नाम वाला, **वायसः** = कौवा, **अहम्** = मैं, **हिरण्यकः** = हिरण्यक चूहा, **विहस्य** = हँसकर, **आह** = कहता है , **का** = कैसी, **त्वया सह** = तुम्हारे साथ, **मैत्री** = मित्रता,

हिन्दी अर्थ----इसके बाद पूरी घटना को देखने वाले लघुपतनक नाम के कौवे ने आश्चर्य के साथ यह कहा---अरे हिरण्यक, तुम प्रशंसा के योग्य हो, इसलिए मैं भी तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहता हूँ, तुम (अपनी) मित्रता के द्वारा मुझे अनुगृहीत करो। यह सुनकर हिरण्यक ने भी बिल के अन्दर से कहा---'तुम कौन हो?' वह बोला----'मैं लघुपतनक नाम वाला कौवा हूँ।' हिरण्यक ने हँस कर कहा---तुम्हारे साथ कैसी मित्रता? क्योंकि---

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद----

साश्चर्यम् = स + आश्चर्यम्,

इदमाह = इदम् + आह,

श्लाघ्योऽसि = श्लाघ्यः + असि,

अतोऽहमपि = अतः + अहम् + अपि,

कर्तुमिच्छामि = कर्तुम् + इच्छामि,

अतस्त्वम् = अतः + त्वम्,

मैत्र्येणाऽनुगृहीतुमर्हसि = मैत्र्येण + अनुग्रहीतुम् + अर्हसि,

एतच्छ्रुत्वा = एतत् + श्रुत्वा,

हिरण्यकोऽपि = हिरण्यकः + अपि,

विवराऽभ्यन्तरादाह = विवर + अभ्यन्तरात् + आह,

कस्त्वम् = कः + त्वम्,

वायसोऽहम् = वायसः + अहम्,

हिरण्यको विहस्याऽऽह = हिरण्यकः + विहस्य + आह ।

समास विग्रह----

लघुपतनकनामा = लघुपतनकः इति नाम यस्य सः लघुपतनकनामा।

सर्ववृत्तान्तदर्शी = सर्वम् च तत् वृत्तान्तम् च सर्ववृत्तान्तम् तत् पश्यति इति सर्ववृत्तान्तदर्शी।

साश्चर्यम् = आश्चर्येण सहितम् साश्चर्यम्।

विवराऽभ्यन्तरात् = विवरस्य अभ्यन्तरम्, तस्मात् विवराऽभ्यन्तरात्।

8.2.5 सभी के साथ मित्रता अनुचित

यद् येन युज्यते लोके बुधस्तत् तेन योजयेत्।
अहमन्नं भवान् भोक्ता कथं प्रीतिर्भविष्यति।। (55)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित इस कथा के माध्यम से यह बतला रहे हैं कि सभी के साथ मित्रता करना भी ठीक नहीं है, इसलिए सोच समझ के ही किसी मित्रता करनी चाहिये ।

अन्वय---लोके येन यत् युज्यते, बुधः तत् तेन योजयेत् अहम् अन्नम्, भवान् भोक्ता, प्रीतिः कथम् भविष्यति?

शब्दार्थ---- लोके = संसार में, **येन** = जिसके साथ, **यत्** = जो, **युज्यते** = जोड़ने योग्य होता है, **बुधः** = बुद्धिमान्, **तत्** = उसे, **तेन** = उसके साथ, **योजयेत्** = जोड़े, **अहम्** = मैं (चूहा), **अन्नम्** = भोजन, **भवान्** = आप (कौवा), **भोक्ता** = भोजन करने वाला, **कथम्** = कैसे, **प्रीतिः** = प्रेम, **भविष्यति** = होगा।

अनुवाद --- संसार में जिसके साथ जो मिलने योग्य होता है, बुद्धिमान् उसे उसी के साथ मिलाते हैं। मैं (चूहा) भोजन हूँ और तुम (कौवा) भोजन करने वाले हो, अतः हममें प्रेम कैसे होगा (अर्थात् नहीं होगा) ।

व्याख्या ----जब कौए ने चित्रग्रीव की हिरण्यक से प्रगाढ़ मित्रता देखी और उसका सुपरिणाम भी देख लिया कि किस प्रकार अकेले चूहे ने उन सब कबूतरों की जान बचाई, तो इस लघुपतनक नामक कौवे के हृदय में भी मूषिकराज से मित्रता करने की इच्छा जागृत हुई। उसने उन सबके चले जाने पर चूहे को पुकारा और अपना परिचय देने के बाद उसके साथ मित्रता करनी चाही। इस पर चूहे ने कहा कि लोक में कौवा चूहे को खाता है अर्थात् भक्षण करता है, इस कारण तुम मेरे शत्रु हुए, अतः हमारे बीच मित्रता नहीं हो सकती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद----

यद् येन = यत् + येन,

बुधस्तत् = बुधः + तत्,

अहमन्नम् = अहम् + अन्नम्,

प्रीतिर्भविष्यति = प्रीतिः + भविष्यति,

अपरञ्च----

भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिर्विपत्तेः कारणं मतम्
शृगालात् पाशबन्धोऽसौ काकेन रक्षितः।। (56)

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में आचार्य नारायण पण्डित इस कथा के माध्यम से यह बतला रहे हैं कि सभी के साथ मित्रता करना भी ठीक नहीं है इसलिए सोच समझ के ही किसी मित्रता करनी चाहिये ।

अन्वय----भक्ष्यभक्षकयोः प्रीतिः विपत्तेः कारणम् मतम्। शृगालात् पाशबद्धः असौ मृगः काकेन रक्षितः।

शब्दार्थ----**अपरम् च** = और यह भी, **भक्ष्यभक्षकयोः** = खाद्य और खाने वाले की, **प्रीतिः** = मित्रता, **विपत्तेः** = आपत्ति का, **कारणम्** = कारण, **मतम्** = माना जाता है, **शृगालात्** = गीदड़ से, **पाशबद्धः** = जाल में फँसा हुआ, **असौ** = यह, **मृगः** = हिरण, **काकेन** = कौवे के द्वारा, **रक्षितः** = बचा लिया गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

सन्धि विच्छेद—

अपरञ्च = अपरम् + च,

प्रीतिर्विपत्तेः = प्रीतिः + विपत्तेः,

पाशबद्धोऽसौ = पाशबद्धः + असौ ।

समास विग्रह----

भक्ष्यभक्षकयोः = भक्षितुम् योग्यः भक्ष्यः, भक्ष्यश्च भक्षकश्च तयोः भक्ष्यभक्षकयोः (खाद्यखादकयोः)।

पाशबद्धः = पाशेन (जालेन) बद्धः (नियमितः) पाशबद्धः।

अनुवाद ---और भी,

भक्ष्य और भक्षक इन दोनों की प्रीति आपत्ति का कारण बन जाती है। जैसे सियार द्वारा जाल में फँसाया गया वह हिरण कौवे द्वारा बचाया गया।

व्याख्या ----चूहे ने कौवे से कहा कि मैं तुम्हारा भक्ष्य (अन्न) हूँ और तुम मेरे भक्षक (खाने वाले) हो, अतः हम दोनों में मित्रता नहीं हो सकती है। यदि इस पर भी हमने परस्पर प्रीति की तो उसका परिणाम वैसे ही निकलेगा, जैसा कि गीदड़ (शृगाल) ने हिरण को मित्र बनाकर जाल में बँधवा दिया। इनमें एक तो भक्षक था व दूसरा भक्ष्य। वह तो उसके मित्र या बन्धु बने हुए कौवे ने उसे बचा लिया, अन्यथा वह हिरण तो बेचारा मर ही जाता। यहाँ आगे की कथा का वर्णन किया जा रहा है ।

बोध प्रश्न/अभ्यास प्रश्न -

1. इस संसार में कौन नित्य है, जिसकी हमें सर्वदा रक्षा करनी चाहिये ?
2. कौन सबसे बड़ा शक्तिशाली होता है ?

3. सूर्य और चंद्र को कौन ग्रस लेता है ?

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिये –

   (क) **भवेन्नु** = ?

   (ख) **गुणानाञ्च** = ?

   (ग) **दूरमत्यन्तमन्तरम्** = ?

   (घ) **इत्याकर्ण्य** = ?

   (ङ) **ततो हिरण्यकः** = ?

   (च) **पश्यतीहामिषम्** = ?

   (छ) **प्राप्तकालस्तु** = ?

   (ज) **शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्** = ?

   (झ) **गजभुजङ्गमयोरपि** = ?

   (ञ) **विधिरहो** = ?

   (ट) **व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि** = ?

   (ठ) **सम्प्राप्नुवन्त्यापदम्** = ?

   (ड) **निपुणैरगाधरालिलान्मत्स्याः** =?

   (ढ) **सम्प्रेषितश्चित्रग्रीवोऽपि** = ?

   (ण) **विवराऽभ्यन्तरादाह** = ?

   (त) **कस्त्वम्** = ?

   (थ) **अहमन्नम्** = ?

   (द) **प्रीतिर्भविष्यति** = ?

   (ध) **प्रीतिर्विपत्ते**: = ?

   (न) **पाशबद्धोऽसौ** = ?

5. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

   (क) **मलवाहिना** = ?

   (ख) **क्षणविध्वंसि** = ?

   (ग) **आश्रितवात्सल्येन** = ?

   (घ) **त्रैलोक्यस्य** = ?

(ङ) **जालबन्धनविधौ** = ?

(च) **खगः** = ?

(छ) **शशिदिवाकरयोः** = ?

(ज) **ग्रहपीडनम्** = ?

(झ) **गजभुजङ्गमयोः** = ?

(ञ) **व्योमैकान्तविहारिणः** = ?

(ट) **अगाधसलिलात्** = ?

(ठ) **आतिथ्यम्** = ?

(ड) **मूषिकमित्रेण** = ?

(ढ) **मुक्त-बन्धनाः** = ?

(ण) **सर्ववृत्तान्तदर्शी** = ?

(त) **पाशबद्धः** = ?

6. निम्नलिखित पद्यों का अनुवाद कीजिए -

(क) **शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं**
गजभुंजङ्गमयोरपि बन्धनम्।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो बलवानिति मे मतिः।। (52)

(ख) **व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि विहगाः सम्प्राप्नुवन्त्यापदं।**
बध्यन्ते निपुणैरगाधसलिलान्मत्स्याः समुद्रादपि।
दुर्नीतं किमिहाऽस्ति किं सुचरितं कः स्थानलाभे गुणः।
कालो हि व्यसनप्रसारितकरो गृह्णाति दुरादपि।। (53)

7. निम्नलिखित पद्यों की व्याख्या छात्र अपने शब्दों में करें -

(क) **यद् येन युज्यते लोके बुधस्तत् तेन योजयेत्।**
अहमन्नं भवान् भोक्ता कथं प्रीतिर्भविष्यति।। (55)

(ख) **यानि कानि च मित्राणि कर्त्तव्यानि शतानि च।**
पश्य मूषिकमित्रेण कपोता मुक्तबन्धनाः।। (54)

8.3 सारांश

इस अध्याय में यश की रक्षा, आत्मनिंदा अनुचित, भाग्य की प्रबलता, मित्रों का महत्त्व, सभी के साथ मित्रता अनुचित इन भावों को बड़े सरल माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।

8.4 शब्दावली

मलवाहिना = मल को धारण करने वाले,

कायेन = शरीर के द्वारा,

लभ्यते = प्राप्त होता है,

क्षणविध्वंसि = क्षण भर में नाश होने वाला,

कल्पनान्तस्थायिनः = महाप्रलय तक रहने वाले

प्रहृष्टमनाः = प्रसन्न मन वाला,

पुलकितः = रोमांचित,

आश्रितवात्सल्येन = आश्रितों के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण,

उक्त्वा = कह कर,

जालबन्धनविधौ = पाश से बन्धनयुक्त होने पर,

अवज्ञा = तिरस्कार,

योजनशतात् = एक सौ योजन की (एक योजन में चार कोस या आठ मील की दूरी होती है)

आमिषम् = मांस को,

शशिदिवाकरयोः = चन्द्रमा और सूर्य का,

ग्रहपीडनम् = (राहु) ग्रह द्वारा दुःख पहुँचाना,

गजभुजङ्गमयोः = हाथी और सर्प का,

मतिमताम् = बुद्धिमानों की,

दरिद्रताम् = निर्धनता को,

विलोक्य = देखकर,

व्यौमैकान्तविहारिणः = आकाश के ऊपरी भाग में विचरण करने वाले,

विहगाः = पक्षी,

आपदम् = आपत्ति को,

सम्प्राप्नुवन्ति = प्राप्त करते हैं,

अगाधसलिलात् = गहरे पानी वाले,

समुद्रात् = समुद्र से,

मत्स्याः = मछलियाँ,

दुर्नीतम् = अनुचित आचरण,

सुचरितम् = अच्छा,

व्यसनप्रसारितकरः = आपत्ति रूपी हाथ को फैलाने वाला,

गृह्णाति = पकड़ लेता है,

यथेष्टदेशान् = (अपने) इच्छित स्थानों को,

मुक्तबन्धनाः = जाल से छुड़ाए गए

सर्ववृत्तान्तदर्शी = सारी घटना को देखने वाला,

साश्चर्यम् = आश्चर्य के साथ ,

श्लाघ्यः = (तुम) प्रशंसनीय

विवराऽभ्यन्तरात् = बिल के अन्दर से,

विहस्य = हँसकर

8.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- हितोपदेशः – व्या0 श्री नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ' – चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, संवत् 1951
- हितोपदेशः – व्या0 न्यायाचार्य श्रीकृष्ण वल्लभाचार्य – चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, 2018
- अनुवादरत्नाकरः - डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी – चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, 2001
- अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़ 2011
- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री – मोतीलाल बनारसीदास

- संस्कृत शिक्षण सरणी – आचार्य राम शास्त्री - परिमल पब्लिकेशन दिल्ली
- संस्कृत साहित्य का इतिहास वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009 ।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी 2001.
- संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली, 2018.
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- सम्पूर्ण चाणक्य नीति, डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर, 2016.
- spokensanskrit.org
- www.ashtadhyayi.com

8.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. इस संसार यश नित्य है, जिसकी हमें सर्वदा रक्षा करनी चाहिये ।

2. भाग्य सबसे बड़ा शक्तिशाली होता है ।

3. सूर्य और चंद्र को राहु ग्रस लेता है ।

4. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिये –

(क) **भवेन्नु** = भवेत् + नु ।

(ख) **गुणानाञ्च** = गुणानाम् + च,

(ग) **दूरमत्यन्तमन्तरम्** = दूरम् + अत्यन्तम् + अन्तरम्,

(घ) **इत्याकर्ण्य** = इति + आकर्ण्य,

(ङ) **ततो हिरण्यकः** = ततः + हिरण्यक:,

(च) **पश्यतीहामिषम्** = पश्यति + इह + आमिषम्,

(छ) **प्राप्तकालस्तु** = प्राप्तकालः + तु ।

(ज) **शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्** = शशिदिवाकरयोः + ग्रहपीडनम्,

(झ) **गजभुजङ्गमयोरपि** = गजभुजङ्गमयोः + अपि,

(ञ) **विधिरहो** = विधिः + अहो,

(ट) **व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि** = = व्योम + एकान्तविहारिणः + अपि,

(ठ) **सम्प्राप्नुवन्त्यापदम्** = सम्प्राप्नुवन्ति + आपदम्,

(ड) **निपुणैरगाधरालिलान्मत्स्याः** = निपुणैः + अगाधसलिलात् + मत्स्याः,

(ढ) **सम्प्रेषितश्चित्रग्रीवोऽपि** = सम्प्रेषितः + चित्रग्रीवः + अपि,

(ण) **विवराऽभ्यन्तरादाह** = विवर + अभ्यन्तरात् + आह,

(त) **कस्त्वम्** = कः + त्वम्,

(थ) **अहमन्नम्** = अहम् + अन्नम्,

(द) **प्रीतिर्भविष्यति** = प्रीतिः + भविष्यति,

(ध) **प्रीतिर्विपत्ते**: = प्रीतिः + विपत्तेः,

(न) **पाशबद्धोऽसौ** = पाशबद्धः + असौ ।

5. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

(क) **मलवाहिना** = मलानि वहति इति मलवाही तेन मलवाहिना।

(ख) **क्षणविध्वंसि**=क्षणेन विध्वंसते (नश्यति) इति क्षणविध्वंसि।

(ग) **आश्रितवात्सल्येन** = आश्रितेषु वात्सल्यः, आश्रितवात्सल्यः तेन आश्रितवात्सल्येन।

(घ) **त्रैलोक्यस्य** = त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः त्रिलोकी, त्रिलोकी एव त्रैलोक्यम् तस्य त्रैलोक्यस्य।

(ङ) **जालबन्धनविधौ** = जालेन बन्धनम् जालबन्धनम्, तस्य विधिः तस्मिन् जालबन्धनविधौ ।

(च) **खगः** = खे (आकाशे) गच्छति इति खगः,

(छ) **शशिदिवाकरयोः** = शशः चिह्नरूपः अस्ति यस्य इति शशी (चन्द्रमाः), दिवम् करोति इति दिवाकरः (सूर्य), तयोः शशिदिवाकरयोः।

(ज) **ग्रहपीडनम्**=ग्रहेण (राहुणा) पीडनम् (ग्रसनम्) ग्रहपीडनम्।

(झ) **गजभुजङ्गमयोः** = गजः (हस्ती) भुजङ्गमः (सर्पः) तयोः गजभुजङ्गमयोः।

(ञ) व्योमैकान्तविहारिणः = व्योम्नः (गगनस्य) एकान्तः एकः अन्तः (उपरिभागः) तस्मिन् विहरन्ति इति व्योमैकान्तविहारिणः (गगनगामिनः)।,

(ट) अगाधसलिलात् = अगाधानि (अतलस्पर्शानि) सलिलानि (जलानि) यस्मिन् सः तस्मात् अगाधसलिलात्।

(ठ) आतिथ्यम् = न तिष्ठति भोजनादिकम् एकस्थले इति अतिथि:, तस्य सेवा आतिथ्यम्।

(ड) मूषिकमित्रेण = मूषिकः एव मित्रम् तेन मूषिकमित्रेण।

(ढ) मुक्त-बन्धनाः = मुक्तम् (छित्रम्) (जालस्य) बन्धनम् येषाम् ते मुक्त-बन्धनाः।

(ण) सर्ववृत्तान्तदर्शी = सर्वम् च तत् वृत्तान्तम् च सर्ववृत्तान्तम् तत् पश्यति इति सर्ववृत्तान्तदर्शी।

(त) पाशबद्धः = पाशेन (जालेन) बद्धः (नियमितः) पाशबद्धः।

6. निम्नलिखित पद्यों का अनुवाद कीजिए -

(क) **शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं**
गजभुंजङ्गमयोरपि बन्धनम्।
मतिमतां च विलोक्य दरिद्रतां
विधिरहो बलवानिति मे मतिः।। (52)

(ख) **व्यौमैकान्तविहारिणोऽपि विहगाः सम्प्राप्नुवन्त्यापदं।**
बध्यन्ते निपुणैरगाधसलिलान्मत्स्याः समुद्रादपि।
दुर्नीतं किमिहाऽस्ति किं सुचरितं कः स्थानलाभे गुणः।
कालो हि व्यसनप्रसारितकरो गृह्णाति दुरादपि।। (53)

इसका उत्तर छात्र स्वयं लिखें ।

7. निम्नलिखित पद्यों की व्याख्या छात्र अपने शब्दों में करें -

(क) **यद् येन युज्यते लोके बुधस्तत् तेन योजयेत्।**
अहमन्नं भवान् भोक्ता कथं प्रीतिर्भविष्यति।। (55)

(ख) **यानि कानि च मित्राणि कर्त्तव्यानि शतानि च।**
पश्य मूषिकमित्रेण कपोता मुक्तबन्धनाः।। (54)

इसका उत्तर छात्र स्वयं लिखें ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY